Websites:
http://www.sciencepub.net/academia
http://www.sciencepub.net

Emails:
aarena@gmail.com
editor@sciencepub.net

Academia Arena

MARSLAND PRESS
Multidisciplinary Academic Journal Publisher

A Study of Vivekananda's Thoughts on Nationalism

Dr. Jayveer Singh and Shivcharan Namdeo Dhande

*Associate Professor, Department of History, OPJS University, Churu, Rajasthan (India)
**Research Scholar, Department of History, OPJS University, Churu, Rajasthan (India)
e-mail:shavicharandhande@gmail.com

Abstract: Thoughts of Swami Vivekananda are proving true after 120 years. He had said that "the basis of nationalism is religion and culture". He established "Hinduism" as the national identity of India. On September 17, 1893, at the Dharma Sabha in Chicago, he glorified India in the name of "Hindu nation" and analyzed in detail his "proud to be a Hindu". He told that "Management on Hindu religion" is the national definition of Hindutva. Understanding this from the national perspective, we see the underlying unity in the external diversity of our vast country. For millennia, this India has been a union cultural nation. On his return from Chicago, he said that "only the blind do not see, and the insane do not understand that this sleeping country has now awakened. Nothing can stop it from regaining its former glory." He taught all Hindus to rise above all differences and take pride in their national identity. Once Sanatani, Arya Samaji and Sikhs wanted to organize separate meetings in his honor in Lahore, he rejected it and called everyone on the same platform. There he gave his narrative on the "common ground of Hindutva".

[Singh, J. and Dhande, S.N. **राष्ट्रवाद पर विवेकानंद के विचारो का एक अध्ययन.** *Academ Arena* 2023;15(1):7-11]. ISSN 1553-992X (print); ISSN 2158-771X (online). http://www.sciencepub.net/academia. 02. doi:10.7537/marsaaj150123.02.

Keywords: Vivekananda's, Thoughts, Nationalism, India

राष्ट्रवाद पर विवेकानंद के विचारो का एक अध्ययन

सारांश: स्वामी विवेकानंद का चिंतन 120 वर्ष बाद सत्य सिद्ध हो रहा है | उन्होने कहा था " राष्ट्रीयता का आधार धर्म व संस्कृति "ही होता है | उन्होंने" हिन्दुत्व "को भारत की राष्ट्रीय पहचान के रूप में प्रतिष्ठित किया | 17 सितम्बर 1893 को शिकागो में धर्म सभा में उन्होंने भारत को" हिन्दू राष्ट्र " के नाम से महिमा मंडित किया और स्वयं के" हिन्दु होने पर गर्व " को विस्तार से विश्लेषित किया | उन्होंने बताया " हिन्दू धर्म पर प्रबंध " ही हिन्दुत्व की राष्ट्रीय परिभाषा है | इसे राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में समझने पर हमें हमारे विशाल देश की बाहरी विविधता में अन्तर्निहित एकता के दर्शन होते हैं |सहस्त्राब्दियों से यह भारत वर्ष आर्यावर्त एक संघ संस्कृतिक राष्ट्र रहा है | शिकागो से वापसी पर उन्होंने कहा कि " केवल अंध देख नहीं पाते, और विक्षिप्त बुद्धि समझ नहीं पाते कि यह सोया देश अब जाग उठा है |अपने पूर्व गौरव को प्राप्त करने के लिए इसे अब कोई नहीं रोक सकता |" उन्होंने सभी हिन्दुओं को सब भेदों से ऊपर उठकर अपनी राष्ट्रीय पहचान पर गर्व करना सिखाया| एक बार लाहोर में उनके सम्मान में सनातनी,आर्यसमाजी तथा सिखों ने अलग अलग सभाओं का आयोजन करना चाहा तो उन्होंने इसे अस्वीकार कर दिया और सबको एक ही मंच पर आह्वान किया| वहां उन्होंने" हिन्दुत्व के सामान्य आधार " पर अपना आख्यान दिया |

1.1 परिचय स्वामी विवेकानंद का नव-वैदांतिक दर्शन इस प्रश्न से शुरू होता है कि 'मानव-जीवन का उद्देश्य क्या है?' जहां वह बताते हैं कि जीवन का उद्देश्य है- एक सार्थक, नि:स्वार्थ और सेवा-भाव रखने वाला जीवन। उनका विचार है कि जीवन केवल एक अस्तित्व नहीं है, बल्कि एक ऐसा जीवन है जिसमें दूसरों की मदद करने और उनकी सेवा करने का दृढ़ संकल्प हो। उनके अनुसार, एक सफल जीवन तब तक सार्थक नहीं है, जब तक उसमें दूसरों के लिए सेवा भाव न हो। स्वामी जी के अनुसार, मनुष्य भीतर से तभी विकसित

हो सकता है, जब वह बाहर दूसरों को विकसित करे। जीवन ऐसा नहीं होना चाहिए जो एकांत और सक्रिय जीवन से दूर हो। बल्कि उनका दर्शन एक ऐसे कर्मयोगी का है, जो नि:स्वार्थ कर्म से मानवता की सेवा में सक्रिय हो।

स्वामी विवेकानंद का राष्ट्र-निर्माण का मार्ग व्यक्ति-निर्माण से शुरू होता है। उनके अनुसार, राष्ट्रीय चरित्र और कुछ नहीं बल्कि उसके नागरिकों का चरित्र है। अत: राष्ट्र निर्माण का कार्य अपने नागरिकों के व्यक्तित्व-विकास और चरित्र-निर्माण से प्रारंभ होता है। उनके अनुसार, राष्ट्र को महान बनाने के लिए हमें राष्ट्र को महान बनाने वाले नागरिकों को महान बनाना होगा। इसके लिए चरित्र निर्माण जरूरी है। उनके अनुसार, चरित्र में 4 पहलू होते हैं, जो शारीरिक, मानसिक-भावनात्मक, सामाजिक-राष्ट्रीय और आध्यात्मिक हैं।

शारीरिक शक्ति, जिसमें देशवासियों की फिटनेस और स्वास्थ्य शामिल है, को उन्होंने उस आधार के रूप में बताया है, जिस पर मानव-व्यक्तित्व की इमारत टिकी हुई है। उन्होंने कहा, "गीता के अध्ययन की तुलना में आप फुटबॉल के माध्यम से स्वर्ग के अधिक निकट होंगे।"

स्वामी जी के फिटनेस और स्वास्थ्य संबंधी उपरोक्त दर्शन से प्रेरित प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा शुरू किए गए फिट इंडिया मूवमेंट का उद्देश्य नागरिकों और युवाओं को अपने दैनिक जीवन में शारीरिक गतिविधियों और खेलों को शामिल करके स्वस्थ और फिट रहने के लिए प्रोत्साहित करना है।

उसी तरह योग की प्राचीन भारतीय परंपराओं का अमूल्य उपहार, जो शरीर और मन की एकता का प्रतीक है, से दुनिया को परिचित कराने का काम प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा 'योग दिवस' के माध्यम से किया गया। जिसकी शुरुआत वर्ष 2014 में संयुक्त राष्ट्र में इस संबंध में प्रधानमंत्री द्वारा दिए गए प्रेरक भाषण से हुआ।

शारीरिक रूप से स्वस्थ होने के अलावा स्वामी विवेकानंद चाहते थे कि नागरिक बौद्धिक और मानसिक रूप से भी स्वस्थ और रचनात्मक हों। उनके अनुसार, ब्रहमांड की सभी शक्तियां पहले से ही हमारी हैं। यदि मन तीव्र रूप से उनके प्रति उत्सुक है, तो सब कुछ पूरा किया जा सकता है। बड़े-बड़े पहाड़ों को परमाणुओं में तोड़ दिया जा सकता है। उन्होंने कहा-एक विचार आत्मसात करो, उस विचार को व्यक्त करो, उस विचार के बारे में चिंतन करो और उस विचार के अनुसार जीवन जीएं। इस प्रकार उस विचार को अपने जीवन का हिस्सा बना लें। उस विचार में स्वयं को लीन कर लें। अपने जीवन के प्रत्येक क्षण और प्रत्येक न्यूरॉन को उस विचार पर केंद्रित किया जाना चाहिए। आप कर्मयोगी तभी हो सकते हैं, जब आपका मन उन चुने हुए विचारों के प्रवाह में लीन हो और तभी जीवन की सफलता प्राप्त की जा सकती है।

स्वामी विवेकानंद ने देशवासियों, अधिकारियों और नेताओं के लिए 'राष्ट्र-सेवा' को अपने प्रमुख कर्तव्य के रूप में अपनाने का सुझाव दिया। राष्ट्रवाद के पुनरुत्थान के लिए विवेकानंद का ध्यान युवाओं पर केंद्रित था। वह युवाओं को सलाह देते हैं कि जो कुछ भी उन्हें शारीरिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक रूप से कमजोर बनाता है, उसे जहर के रूप में अस्वीकार कर दें। एक महान राष्ट्र बहादुर एवं साहसी लोगों से बनता है। उनके अनुसार, एक राष्ट्र युवाओं से जो चाहता है, वह है- रक्त में जोश, नसों में ताकत, लोहे जैसी मांसपेशियां और विचारों में नरम। स्वामी जी के अनुसार, यौवन जीवन का सर्वोत्तम समय होता है। जिस तरह से युवा इस अवधि का उपयोग करते हैं, वह उनके आगे आने वाले वर्षों की प्रकृति को तय करता है। उन्होंने कहा, यदि तुम्हे महान कार्य करना है तो किसी भी चीज से मत डरो। जिस क्षण तुम डरोगे, तुम कुछ भी नहीं रहोगे, अस्तित्व विहीन हो जावोगे। भय संसार में दु:ख का सबसे बड़ा कारण है। जो कुछ भी करो, उसमें निडर रहो एवं उस पर विश्वास करो। इस बात में विश्वास मत करो कि तुम कमजोर हो, बल्कि तुम खड़े हो जाओ और अपने भीतर की दिव्यता को व्यक्त करो। इसलिए "उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए।"

स्वामी विवेकानंद के विचारों से प्रेरित होकर मोदी सरकार ने "मिशन कर्मयोगी (युवा सिविल सेवकों के लिए), स्किल इंडिया मिशन, मेक इन इंडिया, बेटी

बचाओ, बेटी पढ़ाओ, डिजिटल इंडिया मिशन, स्टार्ट-अप इंडिया और ऐसे कई मिशन शुरू किए। मोदी सरकार द्वारा इन सब क्रियाकलापों के माध्यम से राष्ट्र और मानव जाति की सेवा के उद्देश्य के साथ ही साथ राष्ट्र-निर्माण के लिए युवाओं की क्षमता का उपयोग करना है। संस्कृति के उत्थान के लिए एवं बौद्धिक कौशल सीखने और उसे विकसित करने के लिए स्वामी विवेकानंद ने मूल्य आधारित शिक्षा पर जोर दिया। उनके लिए शिक्षा केवल तथ्य, आंकड़े और जानकारी नहीं है, बल्कि विचार है। शिक्षा जीवन-निर्माण, मानव-निर्माण, चरित्र-निर्माण के विचारों को आत्मसात करने का साधन है। उनके अनुसार, एक राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली होनी चाहिए तथा हमारे देश की संपूर्ण शिक्षा, आध्यात्मिकता और धर्मनिरपेक्षता संबंधी क्रियाकलाप हमारे अपने हाथों में एवं राष्ट्रीय पद्धतियों के माध्यम से राष्ट्रीय स्तर पर होनी चाहिए।

'नई शिक्षा नीति 2020', वास्तव में स्वामी जी के दर्शन को उन्मुख करती है और मूल्य आधारित शिक्षा इसका लक्ष्य है। जो छात्रों में राष्ट्रीय चरित्र के निर्माण के अंतर्निहित उद्देश्य के साथ, भारत की समृद्ध संस्कृति और इतिहास के बारे में जागरूक करने वाली है। 'नई शिक्षा नीति 2020' मूल्य आधारित शिक्षा के साथ ही व्यावहारिक जीवन के सिद्धांत, समृद्ध पारंपरिक ज्ञान के साथ आधुनिकता को जोड़ने का भी प्रयास है।

1.2 आध्यात्मिक-राष्ट्रवाद

आधुनिक भारतीय-राष्ट्रवाद के पिता के रूप में सम्मानित स्वामी विवेकानंद ने 'आध्यात्मिक-राष्ट्रवाद' के विचार की व्याख्या की। स्वामी जी के अनुसार, राष्ट्रवाद का जड़ अध्यात्मवाद से ही निकलता है। उनके अनुसार, राष्ट्रीय जागृति के लिए धर्म ही मुख्य मार्ग है। उनके लिए धर्म राष्ट्र की नसों का खून है। उन्होंने कहा, "मैं धन्य हूं कि मैंने ऐसे महान हिंदू धर्म में जन्म लिया जो सभी धर्मों को आत्मसात करता है।" स्वामी विवेकानंद का मानना था कि भारत में धर्म स्थिरता और राष्ट्रीय एकता के लिए एक रचनात्मक शक्ति रहा है। उन्होंने आध्यात्मिकता को भारत के विविध धार्मिक पहचानों के बीच उन्हें एक राष्ट्रीय प्रवाह में एकीकृत करने में सक्षम अभिसरण बिंदु के रूप में देखा। उन्होंने भारतीयों को शक्ति और निडरता का विचार दिया। उन्होंने घोषणा की, 'मेरे धर्म का सार शक्ति है'। उनके लिए पूजा का सबसे अच्छा तरीका था, गरीबों, दलितों, बीमारों और अज्ञानियों में भगवान को देखना और उनकी सेवा करना।

स्वामी जी के अनुसार, राष्ट्रवाद और सार्वभौमिकता शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के दो स्तंभ हैं। लेकिन राष्ट्रवाद संकीर्णता नहीं है और न ही हमारी अपनी सीमाओं तक ही सीमित है। हमारा राष्ट्रवाद सार्वभौमिक शांति के लिए खतरा नहीं है। उन्होंने कहा, "प्रत्येक राष्ट्र के पास अपने को पूर्ण करने के लिए एक नियति होती है, प्रत्येक राष्ट्र के पास देने के लिए एक संदेश होता है तथा प्रत्येक राष्ट्र को अपने आप को पूर्ण करने का एक मिशन होता है। इसलिए हमें अपनी खुद के मिशन को समझना होगा, इसे किस नियति को पूरा करना है, राष्ट्रों की यात्रा में इसे किस स्थान पर पहुंचना है। इसके लिए आपसी सद्भाव में योगदान देना होगा। मोदी सरकार का 'सबका साथ, सबका विकास' के बाद 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के विचार का उद्देश्य स्वामी विवेकानंद के राष्ट्रवाद संबंधी आदर्श विचारों के साथ एक आधुनिक और मजबूत भारत बनाना है। उन्होंने आत्मनिर्भर भारत का सुझाव दिया था, जिसकी भौतिक समृद्धि शिक्षा और मानव-पूंजी के माध्यम से प्राप्त की जा सकती है।

स्वामी जी ने महसूस किया था कि भारत की ताकत इसके कृषि में निहित है और किसानों की आय में सुधार के लिए उन्होंने कृषि के व्यावसायीकरण का समर्थन किया था। हाल के कृषि सुधार और कृषि-क्षेत्र पर बजट-2021 का फोकस इस तथ्य की गवाही देता है कि मोदी सरकार का जोर भारत के कृषि क्षेत्र के आधुनिकीकरण पर है ताकि किसानों की आय बढ़ाई जा सके।

भारत तभी एक विश्व-गुरु हो सकता है जब वह आध्यात्मिकता के मार्ग का अनुसरण करे और उसका राष्ट्रवाद 'वसुधैव कुटुम्बकम' के सिद्धांत पर आधारित हो।

राष्ट्रवाद पर विवेकानंद के विचार भौगोलिक या राजनीतिक या भावनात्मक एकता पर आधारित नहीं

थे, न ही इस भावना पर कि 'हम भारतीय हैं। राष्ट्रवाद पर उनके विचार गहन आध्यात्मिक थे। उनके अनुसार यह लोगों का आध्यात्मिक एकीकरण, आत्मा की आध्यात्मिक जागृति था। उन्होंने प्रचलित विविधता को विभिन्न आधारों पर पहचाना और सुझाव दिया कि भारतीय राष्ट्रवाद पश्चिम की तरह पृथकतावादी नहीं हो सकता है।

उनके अनुसार भारतीय लोग गहन धार्मिक प्रकृति के हैं और इससे एकजुट होने की शक्ति प्राप्त की जा सकती है। राष्ट्रीय आदर्शों के विकास से उद्देश्य और कार्यवाही में एकता प्राप्त की जा सकती है। उन्होंने करुणा, सेवा और त्याग को राष्ट्रीय आदर्शों के रूप में मान्यता दी। इसलिए विवेकानंद के लिए राष्ट्रवाद सार्वभौमिकता और मानवता पर आधारित था।

- उनका मानना था कि प्रत्येक देश में एक ऐसा प्रभावी सिद्धांत होता जो उस देश के जीवन में समग्र रूप से परिलक्षित होता है और भारत के लिए यह धर्म था। धर्मनिरपेक्षता पर आधारित पश्चिमी राष्ट्रवाद के विपरीत स्वामी विवेकानंद के राष्ट्रवाद का आधार धर्म, भारतीय आध्यात्मिकता और नैतिकता थी। भारत में आध्यात्मिकता को सभी धार्मिक शक्तियों के संगम के रूप में देखा जाता है। यह माना जाता है कि यह इन सभी शक्तिओं को राष्ट्रीय प्रवाह में एकजुट करने में सक्षम है।
- उन्होंने मानवतावाद और सार्वभौमिकता के आदर्शों को भी राष्ट्रवाद के आधार के रूप में स्वीकार किया। इन आदर्शों ने लोगों का स्व-प्रेरित बंधनों और उनके परिणामी दुखों से मुक्त होने हेतु पथप्रदर्शन किया है।

पिछली दो शताब्दियों के दौरान राष्ट्रवाद विभिन्न चरणों से गुज़रा है और सर्वाधिक आकर्षक शक्तियों में से एक के रूप में उभरा है। इसने लोगों को एकजुट करने के साथ-साथ विभाजित भी किया है। उन्नीसवीं शताब्दी में इसने यूरोप के एकीकरण तथा एशिया और अफ्रीका में उपनिवेशों की समाप्ति में प्रमुख भूमिका निभाई थी।

हालांकि, वर्तमान विश्व में कट्टरपंथी राष्ट्रवाद का उदय हो रहा है। अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के स्थापित सम्मेलनों से संयुक्त राज्य अमेरिका का अलग होना, ब्रेक्ज़िट, स्कॉटलैंड की स्वतंत्रता के लिए दूसरे जनमत संग्रह की मांग इत्यादि इसके कुछ उदाहरण हैं। ऐसे में राष्ट्रवाद के एक संकीर्ण दृष्टिकोण ने अनेक समूहों में पैठ बना ली है। ये समूह दूसरों पर अपने अधिकार और अपने विशेषाधिकारों को सुनिश्चित करना चाहते हैं। ऐसा राष्ट्रवाद राष्ट्रों को विभाजित करता है, उन्हें अलग करता है और असमानता बढ़ाने वाली अर्थव्यवस्थाओं को जन्म देता है। साथ ही यह अनेक ऐसे लोगों को देश से दूर कर देता है जो देश के लिए योगदान दे सकते हैं।

आधुनिक राष्ट्रवाद की विभाजनकारी शक्तियों के विपरीत स्वामी विवेकानंद का दृष्टिकोण सार्वभौमिक पहुँच और आध्यात्मिक पहचान की एकता पर केंद्रित था। यह समय उनकी "प्रबुद्ध राष्ट्रवाद" की धारणा को आत्मसात करने का है जो इस बात पर बल देता है कि किसी एक देश का दूसरे देश पर अधिग्रहण करने का कोई आध्यात्मिक या नैतिक औचित्य नहीं हो सकता है।

निष्कर्ष

स्वामी विवेकानंद का जन्म 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध में हुआ लेकिन उनके विचार और जीवन दर्शन आज के दौर में अत्यधिक प्रासंगिक हैं। विवेकानंद जैसे महापुरुष मृत्यु के बाद भी जीवित रहते हैं और अमर हो जाते हैं तथा सदियों तक अपने विचारों और शिक्षा से लोगों को प्रेरित करते रहते हैं। मौजूदा समय में विश्व संरक्षणवाद एवं कट्टरवाद की ओर बढ़ रहा है जिससे भारत भी अछूता नहीं है, विवेकानंद का राष्ट्रवाद न सिर्फ अंतर्राष्ट्रीयवाद बल्कि मानववाद की भी प्रेरणा देता है। इसके साथ ही विवेकानंद की धर्म की अवधारणा लोगों को जोड़ने के लिये अत्यंत उपयोगी है, क्योंकि यह अवधारणा भारतीय संस्कृति के प्राण तत्व सर्वधर्म समभाव पर ज़ोर देती है। यदि विश्व सर्वधर्म समभाव का अनुकरण करे तो विश्व की दो-तिहाई समस्याओं और हिंसा को रोका जा सकता है। भारत की एक बड़ी संख्या अभी भी गरीबी में जीवन जीने के लिये मजबूर

है तथा वंचित समुदायों की समस्याएँ अभी भी वैसी ही बनी हुई हैं यदि विवेकानंद की दरिद्रनारायण की संकल्पना को साकार किया जाए तो असमानता, गरीबी, गैर-बराबरी, अस्पृश्यता आदि से बिना बल प्रयोग किये ही निपटा जा सकता है तथा एक आदर्श समाज की संकल्पना को साकार किया जा सकता है।

आधुनिक काल में पश्चिमी विश्व में राष्ट्रवाद की अवधारणा का विकास हुआ लेकिन स्वामी विवेकानंद का राष्ट्रवाद प्रमुख रूप से भारतीय अध्यात्म एवं नैतिकता से संबद्ध है। भारतीय संस्कृति के प्रमुख घटक मानववाद एवं सार्वभौमिकतावाद विवेकानंद के राष्ट्रवाद की आधारशिला माने जा सकते हैं। पश्चिमी राष्ट्रवाद के विपरीत विवेकानंद का राष्ट्रवाद भारतीय धर्म पर आधारित है जो भारतीय लोगों का जीवन रस है। उनके लेखों और उद्धरणों से यह इंगित होता है कि भारत माता एकमात्र देवी हैं जिनकी प्रार्थना देश के सभी लोगों को सहृदय से करनी चाहिये।

सन्दर्भ सूचि:

[1]. मेरी लुइवर्क- स्वामी विवेकानन्द इन अमेरिका, न्यू डिस्कवरीज कलकाता 1966, पृष्ठ 143
[2]. अविनाश लिंगम टी अस, स्वामी विवेकानन्द शिक्षा 1977, पृष्ठ 13
[3]. स्वामी विवेकानन्द शिक्षा, संस्कृति और समाज, पृष्ठ 91-92
[4]. स्वामी विवेकानन्द शिक्षा (अनुवादक) द्वारकानाथ तिवारी, पृष्ठ 48-49
[5]. वही पृष्ठ 18
[6]. विवेकानन्द साहित्य संचयन (सस्ता द्वितीय संस्करण) नागपुर, पृष्ठ 197
[7]. वही पृष्ठ 198
[8]. वही पृष्ठ 457-458.

1/2/2023